प्राचीन भारतीय इतिहास में सिक्कों का धार्मिक महत्व

अशोक कुमार
Lect. in History M.A. , NET (History)
G.SSS Gudhan, Rohtak (Haryana)

शोध–आलेख सारः–

भारत का प्राचीन साहित्य ज्ञान–राशि से भरा पड़ा हैं , फिर भी प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के लिए वास्तविक ऐतिहासिक ग्रन्थों का अभाव हैं। आधुनिक समय में भारत का प्राचीन साहित्य क्रमबद्ध रूप से उपलब्ध नहीं होता इसलिए इतिहासकार प्राचीन इतिहास निर्माण में पुरातत्व सामग्री का सहारा लेते हैं। पुरातत्व सामग्री में सिक्कों का विशेष स्थान हैं जहां पर लेख आदि पीछे रह जाते है[1] सिक्कों के अध्ययन से सामाजिक , राजनैतिक एवं आर्थिक विषयों की जानकारी के अतिरिक्त प्राचीन समय की धार्मिक भावना पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता हैं। भारतीय इतिहास में अनेक वंशावलियां ऐसी हैं जिनका ज्ञान केवल सिक्कों के बल पर ही उपलब्ध होता है[2] इसी के अध्ययन से लोकतन्त्र शैली के शासन की जानकारी मिलती हैं। इस प्रकार सिक्के प्राचीन भारतीय इतिहास के दैवीय राजस्व सिद्धांत , धार्मिक देवी देवताओं , राज्य की सीमाएं आदि जानने में अतुल्य हैं।

मूल शब्द :–

ऐतिहासिक ग्रन्थ , प्राचीन साहित्य , पुरातत्व सामग्री , वंशावलियां , लोकतन्त्र , दैवीय राजस्व सिद्धांत ।

भूमिका :–

प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के लिए इतिहासकार पुरातत्व सामग्री पर निर्भर है और इनमें सबसे महत्वपूर्ण सटीक जानकारी देने में सिक्के हमेशा अग्रणी रहे हैं। सिक्कों से वर्तमान समय की सामाजिक , आर्थिक , राजनैतिक तथा विशेषकर धार्मिक अवस्था पर प्रकाश पड़ता हैं। सिक्कों पर उत्कीर्ण लेखों में किसी विशेष घटना का उल्लेख नहीं मिलता लेकिन उन पर खुदे चिन्हों के आधार पर धर्म की अनेक बातें स्पष्ट हो जाती हैं। प्राग–ऐतिहासिक समय से ही भारत में प्रचलित चिन्ह् तत्कालीन धार्मिक भावना के घोतक हैं[3]। मोहन जोदड़ों से लेकर बारहवीं सदी तक के विभिन्न चिन्ह् पांच हजार वर्षों के धार्मिक इतिहास की जानकारी देते हैं।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। शोध सामग्री को प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया हैं। वस्तुतः यह शोध पत्र द्वितियक आकड़ों पर आधारित हैं।

शोध के उददेश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित हैः–

प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्व को समझना ।

पुरातत्व सामग्री में सिक्कों के महत्व को उजागर करना।

प्राचीन इतिहास की जानकारी में सिक्कों के योगदान को दर्शाना ।

भारत में सबसे पुराने सिक्के ''कार्षापण'' के नाम से जाने जाते हैं। जिन्हें ''आहत सिक्के'' भी कहा जाता हैं। इन पर खुदे चिन्ह् से लोगों की धार्मिक भावनाओं का अनुमान लगाया जा सकता हैं। सिक्कों पर चिन्ह् के रूप में वृक्ष , वृषभ तथा चक्र आदि प्राचीन काल से ही प्रयोग होते रहे हैं। वृषभ

तथा वृक्ष के चित्र तो हड़प्पाकालीन मुद्राओं पर भी मिलते है[4] जिनसे शैव मत होने का आभास होता हैं। भण्डारकार महोदय ने भी इस मत को समर्थन दिया हैं।

प्राचीन गणराज्यों – यौधये , आर्जनायन , कुणिन्द , औदुम्बर तथा मालवा के सिक्के पर भी नन्दी का चिन्ह् मिलता हैं जिससे स्पष्ट होता हैं कि प्राचीन समय में नन्दी से शैव मत का प्रचार किया जाता था। गण के अलावा अयोध्या , अवन्ति , कौशाम्बी आदि राज्यों में भी शिव जी पर अटल विश्वास था। यहां के सिक्कों पर भी नन्दी को स्थान प्राप्त था। पांचाल सिक्कों पर तो शिवलिंग की आकृति देखने को मिलती हैं। उत्तर – पश्चिमी भारत में तो इसका प्रचार इतना अधिक था कि विदेशी भी इस मत से अछूते न रहे। भारतीय यूनानी राजाओं ने नन्दी को अपनाकर उस प्रभाव को लक्षित किया हैं । इनमें से ''मिलिद'' व ''अचलदत्तस'' के सिक्कों पर नन्दी की आकृति मिलती हैं। प्रथम सदी ई0 पू0 में शक राजामोऊ ने तक्षशिला को राजधानी बनाकर गांधार पर शासन किया था उसके सिक्कों पर भी ''नन्दी '' व शैव मत का प्रभाव हैं। कुषाण काल के सिक्के तो संकेत देते हैं कि शैव मत राजधर्म का रूप धारण कर चुका था। महाराज विम केड़फीसस के सिक्कों पर शंकरजी की मूर्ति व उनके वाहन नन्दी की आकृति तैयार की गई थी । कनिष्क बौद्ध धर्म का अनुयायी होने पर भी हिन्दू धर्म का सम्मान करता था यही कारण है कि उसके सिक्कों पर अन्य देवों के साथ–साथ ''ओइशो''(महेश)[9] का नाम भी लिखा था। शकराजा वासुदेव ने शिव को सबसे मुख्य देवता मानकर शिवमूर्ति को ही सिक्कों पर खुदवाया था। इसमें संदेह का स्थान नहीं रह जाता कि गंधार में शताब्दियों से शैवमत का प्रचार था।

प्राचीन समय में प्रचलित सिक्कों के आधार पर यह जानकारी मिलती हैं कि राजपूताना , मालवा व सौराष्ट्र में शैवमत का प्रचार था। नागवंश के राजा शिव के भक्त थे[7]। नाग वंश के सिक्कों पर शिव की आकृति तथा राजा शिवलिंग ताज धारण किए मिलते हैं। इसलिए इन्हें भारशिव के नाम से पुकारा जाता था । गुप्तकालीन सिक्कों के विवरण को छोड़कर जब मुद्रा का अध्ययन किया जाता हैं। तब पता लगता हैं कि पांचवीं सदीं में पूर्वी पंजाब तथा मध्य भारत में शैव चिन्ह् युक्त सिक्के प्रचलित थे। हुण राजा मिहिर कुल में भी अपने सिक्कों पर नन्दी की मूर्ति खुदवाई थी और ''जयतुवृष'' लेख उत्कीर्ण करवाया था।

पूर्व मध्यकाल के राजपूत राजा छोटी रियासतों के शासक होकर भी सिक्के तैयार करते रहे । उनके सिक्कों पर शिव जी व नन्दी की आकृति होना उनका शैव मत में विश्वास दर्शाता हैं । पश्चिमी भारत के अलावा बंगाल में भी शैव मत का विस्तार हो गया था गौडाधिपति शशांक ने भी अपने काल की स्वर्ण मुद्राओं पर शिव की मूर्ति तथा वाहन नन्दी की आकृति तैयार कराई थी।

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास में गुप्तकाल स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता रहा हैं। गुप्त शासकों ने वैष्णव धर्म को राजधर्म घोषित किया था और खुद परमभागवत की पद्वी से विभुषित हुए थे। गुप्त राजाओं ने सबसे पहले गुरूड़ ध्वज को सिक्कों पर[6] स्थान दिया और विष्णु की भार्या लक्ष्मी को मुख्य जगह पर खुदवाया था । चांदी के सिक्कों पर ''परम् भागवत'' की पद्वी भी अंकित करवाई गई थी।इन सब बातों के विवेचन से शासकों के विचार तथा प्रचलित धर्म का अनुमान लगाया जा सकता हैं। गुप्त काल के सोने के सिक्कों पर ''गुरूड़'' तथा लक्ष्मी की आकृतियां उस समय को वैष्णव मत के प्रचार का बोध कराते हैं । इसके अलावा कुछ राजाओं की मूर्तियों के हाथ में चक्रध्वज भी दिखाई देता हैं। भरतपूर राज्य के ब्याना ढेर से स्वतन्त्रता के बाद जो सिक्के प्राप्त हुए हैं इनमें ''चक्र–विक्रम[8]'' का सिक्का विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । उसके अग्र भाग में 'प्रभामण्डल युक्त भगवान विष्णु' की आकृति बनी हैं जो गुप्त राजा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य को तीनों लोक भेट कर रही हैं। पृष्ठ भाग में एक चक्र – विक्रम का लेख अवतीर्ण हैं। इस तरह सिक्कों के अध्ययन से यह प्रमाणित हो जाता हैं कि गुप्त राजा परम वैष्णव थे और साम्राज्य में वैष्णव मत का खूब प्रचार था । पिछले गुप्त नरेशों ने पूर्वजों का

अनुसरण किया , जिसके कारण वैष्णव मत चौथी सदीं से बारहवीं सदीं तक कायम रहा । इसका प्रचार उत्तर भारत , मध्य भारत , बिहार में तो था ही पूर्व मध्यकाल के गहरवार , चन्देल तथा कलचूरी शासकों ने भी अपने सिक्कों के पृष्ठभाग पर लक्ष्मी की मूर्ति को बनाए रखा। इस कारण से जनता में विष्णु पूजा के गहरे प्रभाव का आभास मिलता हैं । उत्तर भारत के अलावा दक्षिण भारत के सिक्कों पर भी स्थानीय प्रभाव दिखलाई पड़ता हैं।

अन्त में यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि सिक्कों के माध्यम ने भारत के धार्मिक इतिहास में नया मार्ग उपस्थित कर दिया हैं विद्वानों का ध्यान इस ओर पूरी तरह से आकृष्ट नहीं हुआ हैं , लेकिन भारतीय समाज के इतिहास निर्माण में मुद्राशास्त्र से काफी सहायता मिलती हैं। जहां तक भारतीय इतिहास का संबंध हैं ,प्राचीन सिक्कों की धार्मिक भावना उसे समझने में सहायता देती हैं। सिक्कों के बिना बाकि मतों का अध्ययन अधूरा ही रहेगा।

सन्दर्भ सूची :–

1. Ancient Indian History and Civilization , Second Edition , Sailndre Nath Sen , Page -17,19
2. The vedic age -1971 , Page -58,59
3. Social and Cultural History of Ancient India , Manilal Bose Page-14
4. India’s Ancient Past ,R.S. Sharma , Oxford , Page-210-11
5. Indian Numismatic Studies , K.D. Bajpal , Page – 15
6. Indian Numismatic Studies , K.D. Bajpal – 2004 , Page – 134
7. Ancient Indian Administration & Penalogy: Pariparnaneta Verma – 1993 , Page-79
8. Coins and Coin Hoards of Rajasthan , Premlata Pokharna-1997, Page-1
9. Coins of Ancient India: The early foreign dynasties and the Guptas…… South India and Miscellaneous coins Page-75